

## रॉबर्ट वानॉय , पुराने नियम का इतिहास, व्याख्यान 8

### उत्पत्ति 2

#### 1. क्या यह सृष्टि का एक और विवरण है?

हम उत्पत्ति 2 पर चर्चा कर रहे थे, और उत्पत्ति 2 के अंतर्गत पहला बिंदु है, "क्या यह सृष्टि का एक और विवरण है?" हम वास्तव में उस प्रश्न की चर्चा में नहीं आये। मुझे लगता है कि मैंने इसे अभी आखिरी कक्षा घंटे में पेश किया है। हम आज दोपहर उस बिंदु पर विचार करेंगे। मैं उस प्रश्न का उत्तर दूंगा: क्या उत्पत्ति 2 सृष्टि का एक और विवरण है? मैं 'हां' में उत्तर दूंगा लेकिन केवल बहुत योग्य अर्थ में। मुझे लगता है कि आपको यह कहते हुए बहुत सावधान रहना होगा कि उत्पत्ति 2 सृष्टि का एक और विवरण है। निःसंदेह, यह सच है कि उत्पत्ति 1 का कुछ सृष्टि वृत्तांत अध्याय 2 में दोहराया गया है, विशेषकर पुरुष और स्त्री की रचना में। इसे विस्तृत और विस्तारित किया गया है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि अध्याय 2 को मुख्य रूप से सृजन विवरण के रूप में देखा जाना चाहिए। मुझे लगता है कि अध्याय 2 में जोर मनुष्य और निर्मित दुनिया में उसके स्थान और कार्य पर अधिक है। अब, इसे प्रस्तुत करने के लिए, अध्याय 2 उत्पत्ति 1 के एक छोटे से हिस्से को दोबारा बताता है। आपके पास एक अधिक विस्तृत कहानी है कि कैसे भगवान ने पुरुष और महिला की रचना की।

लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह आपको निष्कर्ष पर छोड़ने के लिए पर्याप्त है, जैसा कि एसआर ड्राइवर ने जेनेसिस पर अपनी टिप्पणी में कहा है, जिसका मैंने पिछले कक्षा घंटे में उल्लेख किया था। वह पृष्ठ 8 पर कहता है, "इस प्रकार उत्पत्ति 1:1 से 2:4ए और 2:4बी-25 में पृथ्वी पर मनुष्य की उत्पत्ति की दोहरी कहानी है।" यह एक विशिष्ट, आलोचनात्मक दृष्टिकोण है। उत्पत्ति 1:1-2:4ए में 2:4ए पर दो अध्यायों के बीच विभाजन पर ध्यान दें। श्लोक 2 के मध्य के बीच, पहले भाग और दूसरे भाग 2:4बी के बीच। उत्पत्ति 2:4बी से 25 को दूसरा सृजन खाता कहा जाता है। आलोचनात्मक विद्वानों द्वारा उन दो आख्यानों को उत्पत्ति 1 में "पी खाता" और उत्पत्ति 2 में "जे खाता" का नाम दिया गया है। वहां आपके पास दोहरी रचना कथा है।

एक। उत्पत्ति 2 के प्रति

वन्नॉय का दृष्टिकोण मुझे ऐसा लगता है कि उत्पत्ति 2 को दूसरी रचना कथा के रूप में नहीं बल्कि एक अध्याय के रूप में देखना बेहतर है, जो अध्याय 3 में मनुष्य के पतन के विवरण की तैयारी के लिए दिया गया है। दूसरे शब्दों में, अध्याय 1 से प्रगति हुई है अध्याय 2, और अध्याय 3 तक। यह उस प्रश्न का उत्तर देने से बेहतर है जिसके साथ हमने शुरुआत की थी, "क्या यह सृष्टि का एक और विवरण है?" एक नकारात्मक के साथ. निम्नलिखित कारणों से यह महज़ एक और सृजन कहानी नहीं है।

बी। शब्द टोलेडोथ - अध्याय प्रभाग चर्चा

मैं दो बातें बताऊंगा जो उस प्रश्न का उत्तर देने में महत्वपूर्ण हैं। आप रोमन अंक I के अंतर्गत अपनी रूपरेखा शीट पर ध्यान दें। "क्या यह सृष्टि का एक और विवरण है?" दो उप-बिंदु हैं। A. *टोलेडोथ* शब्द का प्रयोग है। अब उत्पत्ति अध्याय 2:4 में। आप पढ़ें, मैं यहां किंग जेम्स से पढ़ूंगा, "ये आकाश और पृथ्वी की पीढ़ियाँ हैं जब वे बनाए गए थे।" अंग्रेजी शब्द "पीढ़ी" हिब्रू *टोलेडोथ का अनुवाद है*, जो उन लोगों के लिए अंग्रेजी लिप्यंतरण में हिब्रू में लिखा गया है जिन्होंने अभी तक हिब्रू नहीं सीखा है। "ये आकाश और पृथ्वी की पीढ़ियाँ ( *टोलेडोथ* ) हैं।" अब यदि आपको याद हो तो मैंने पहले इसका संक्षेप में उल्लेख किया था। मुझे ऐसा लगता है कि अध्याय 2 के श्लोक 3 के अंत में अध्याय 1 और अध्याय 2 के बीच विभाजन करना बेहतर होगा। दूसरे शब्दों में, यदि आप अपनी रूपरेखा शीट को देखते हैं, तो आप देखेंगे कि पूंजी बी उत्पत्ति 2:4 है- 25 और 2ए उत्पत्ति 1:1-2:3 था। विभाजन बिंदु, श्लोक तीन के अंत में सबसे अच्छा रखा गया है और इसका मतलब है कि यह वाक्यांश "ये की पीढ़ियाँ हैं..." श्लोक 4 से शुरू होने वाले अध्याय 2 का परिचय देता है।

आलोचनात्मक विद्वान इसे लगभग बिना किसी अपवाद के 2:4ए के बाद अलग-अलग तरीके से विभाजित करते हैं। दूसरे शब्दों में, वे श्लोक 4 के उस प्रारंभिक खंड को लेंगे: "ये आकाश और पृथ्वी की पीढ़ियाँ हैं..." और इसे पहले अध्याय के समापन कथन के रूप में समझेंगे। तो फिर श्लोक चार के मध्य में विभाजन हो जाता है। अध्याय 2 वास्तव में शुरू होता है "जब वे उस दिन बनाए गए जब भगवान भगवान ने पृथ्वी और आकाश और मैदान के सभी मैदानों को पृथ्वी पर

होने से पहले बनाया" और इत्यादि। वे अध्याय 2 को श्लोक 4 के मध्य में शुरू करते हैं। अब वे दस्तावेजी परिकल्पना के आधार पर ऐसा करते हैं। हमने पहले उस सामान्य सिद्धांत पर चर्चा की थी। उस आलोचनात्मक दृष्टिकोण के अनुसार पी, मुख्य दस्तावेज़, वह दस्तावेज़ है जो संरचना और संख्याओं और उस प्रकार की विशेषताओं के लिए प्राथमिकता रखता है और वास्तव में उत्पत्ति की पूरी पुस्तक की योजनाबद्ध संरचना उस वाक्यांश "स्वर्ग की पीढ़ियों" पर टिकी हुई है। और पृथ्वी "ये आदम की पीढ़ियाँ हैं", "ये नूह की पीढ़ियाँ हैं", "ये नूह के पुत्रों की पीढ़ियाँ हैं।" पूरी किताब में उनमें से दस हैं और किताब एक तरह से उस वाक्यांश द्वारा संरचित है। आलोचकों के अनुसार यह कुछ ऐसा है जो पी की विशेषता है। इसलिए, पहला अध्याय पी है, वह वाक्यांश पी है इसलिए उस वाक्यांश को पहले अध्याय के साथ जाना होगा। और फिर यह पहले अध्याय का समापन वक्तव्य बन जाता है, पहले अध्याय का सारांश बन जाता है, न कि दूसरे अध्याय का परिचय देता है।

अब, आप देखते हैं कि उन्हें J के एक भाग के रूप में 2:4b कथन के साथ जाना होगा क्योंकि यहोवा (यहोवा) शब्द वहाँ आता है। 2:4बी में देखें, "जब वे प्रभु परमेश्वर के दिन में बनाए गए।" प्रभु परमेश्वर *यहोवा एलोहीम* है। तो, वहाँ आपको जे स्रोत पर बदलाव मिलता है। श्लोक का दूसरा भाग J होना चाहिए, श्लोक का पहला भाग P होना चाहिए। तो, आप क्या करते हैं? आप कविता को आधे में काटते हैं, और कहते हैं कि यह भाग पी स्रोत से संबंधित है, कविता का दूसरा भाग जे स्रोत से संबंधित है। लेकिन ऐसा करने से एक समस्या खड़ी हो जाती है। वह वाक्यांश "ये पीढ़ियाँ हैं...", पुस्तक में नियमित रूप से दस बार आता है और यदि आप उन्हें देखेंगे तो आप पाएंगे कि यह जो आगे आता है उसका परिचय देता है, न कि जो पहले आया उसका सारांश देता है। यह निम्नलिखित का परिचय देता है। इसका मतलब है कि यदि आप 2:4ए के वाक्यांश को आलोचकों की तरह समापन वक्तव्य के रूप में लेते हैं। फिर अन्य 9 स्थानों में से प्रत्येक में आपको उस अभिव्यक्ति को एक अलग अर्थ, एक अलग कार्य देना होगा क्योंकि यह स्पष्ट रूप से जो आगे आता है उसका परिचय देता है, न कि जो पहले आया उसका सारांश देता है। अब हम यहाँ एक उदाहरण लेते हैं, मैं सिर्फ एक को चुनूँगा। उत्पत्ति 11:27, "तेरह की पीढ़ियाँ ये हैं ..."। उत्पत्ति 11:27 का अनुसरण क्या है? आप अपनी उत्पत्ति की पुस्तक को जानते हैं और उस पर विचार करते हैं।

अध्याय 12 से शुरू होकर, अध्याय 11 के ठीक अंत में, अध्याय 12 की शुरुआत में आपके पास इब्राहीम की कहानी है, आपको तेरह के बारे में कुछ भी नहीं बताया जा रहा है। जो आपको बताया जा रहा है वही तेरह से निकलता है? जो होता है? तेरह से क्या निकलता है? यह इब्राहीम है।

और उसी प्रकार उत्पत्ति 37:2 के साथ, "ये याकूब की पीढ़ियाँ हैं..." आगे जो कुछ है वह वास्तव में याकूब के बारे में बहुत कुछ नहीं है, क्योंकि याकूब कभी-कभार ही प्रवेश करता है, लेकिन उत्पत्ति 37 से जो कुछ मिलता है वह जोसेफ की कहानियाँ हैं, देखें कि आप क्या मुद्दे उठा सकते हैं याकूब से कहो; यूसुफ और याकूब के वंशजों और भाइयों के मिस्र जाने की कहानी। निःसंदेह, याकूब मिस्र में भी गया, लेकिन ध्यान याकूब पर नहीं है, यह इस पर है कि याकूब से क्या मुद्दे निकलते हैं।

तो, हम यह प्रश्न पूछ सकते हैं कि इस अभिव्यक्ति में *टोलेडोथ* का क्या अर्थ है : "ये स्वर्ग और पृथ्वी की पीढ़ियाँ हैं..." *टोलेडोथ*, आप में से उन लोगों के लिए जिनके पास कुछ हिब्रू है, आप शायद इसे अक्षरों में देख सकते हैं वहाँ। यह हिब्रू क्रिया, *यलाद* का व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है "(बच्चों को जन्म देना)" या "पैदा करना।" और यह उसी का संज्ञा रूप है। यह असर के उत्पाद को इंगित करता है, या जो सामने लाया जाता है। यह आमतौर पर बच्चे होते हैं और इसका प्रयोग आमतौर पर संतान या संतान के अर्थ में किया जाता है। ये एक निश्चित व्यक्ति की पीढ़ियाँ हैं। लेकिन कभी-कभी इसका तात्पर्य किसी ऐतिहासिक विकास के उत्पाद या परिणाम से होता है। मैं सोचता हूँ कि उत्पत्ति 2:4 में यही भाव है। दूसरे शब्दों में, जब यह कहता है "ये स्वर्ग और पृथ्वी की पीढ़ियाँ हैं...", तो यह बताता है कि उत्पत्ति 1 में स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माण से इतिहास में क्या सामने आता है। तो, यहाँ वाक्यांश का महत्व है, यह कि यह ईश्वर द्वारा अपने प्राणियों के साथ व्यवहार के एक नए चरण की शुरुआत का प्रतीक है।

अब, हम इस प्रश्न के संबंध में यह सब चर्चा क्यों कर रहे हैं? क्या उत्पत्ति 2 एक दूसरी रचना का विवरण है--किसी प्रकार की उत्पत्ति 1 की डुप्लिकेट कथा? मुझे लगता है कि उत्पत्ति 2:4 से निहितार्थ यह है कि, आपके पास स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की पुनरावृत्ति नहीं है, आप जो पाते हैं वह वही है जो उत्पत्ति 1 में ईश्वर की रचनात्मक गतिविधि से निकला या निकला है। मुद्दा इस

वाक्यांश का उद्देश्य आगे की ओर इशारा करना है, पीछे की ओर नहीं। यह उस तरीके के अनुरूप है जिस तरह से इसका उपयोग बाकी किताब में किया गया है। यह स्वर्ग का इतिहास और उनकी रचना के बिंदु से आगे बढ़ने का अर्थ है। और मुझे लगता है कि यह वाक्यांश हमें बताता है कि उत्पत्ति 2 मनुष्य पर केंद्रित है, वह स्थान जहां वह रहता था, जानवरों पर उसका प्रभुत्व, उसके साथी और सहायक के रूप में महिला की रचना आदि ने अध्याय 3 के लिए रास्ता तैयार किया है। आप देखिए हम अध्याय 1 से आगे बढ़ रहे हैं। यहां *टोलेडोथ* आरंभ से अंत बिंदु तक ऐतिहासिक रेखाओं का संकेत है। यह उत्पाद, परिणाम की ओर इशारा करता है। संबंधकारक, जब आपको मिलता है "ये पीढ़ियाँ हैं..." संबंधकारक प्रारंभिक बिंदु को इंगित करता है, *टोलेडोथ* परिणाम को इंगित करता है।

अब दिलचस्प बात यह है कि इसका अनुवाद करना कठिन काम है। अब आपमें से जो लोग एनआईवी को देख रहे हैं, वे क्या कहते हैं? मैं जानता हूँ कि यह काफी अलग है। "यह आकाश और पृथ्वी का वृत्तान्त है जब वे बनाए गए थे... यह आकाश और पृथ्वी का वृत्तान्त है।" वह कुछ खो गया है। मुझे लगता है कि वास्तव में इस बिंदु पर किंग जेम्स, भले ही यह काफी शाब्दिक है कि आप वास्तव में पीढ़ियों के बारे में नहीं सोचते हैं कि स्वर्ग और पृथ्वी संतान पैदा करते हैं, आपको यह विचार देते हैं कि "क्या जारी होता है" या "क्या निकलता है" "के खाते" से अधिक, जो कि एनआईवी इन सभी के साथ करता है। आइए उत्पत्ति 37:2 को लें और आप देखेंगे कि यह लगभग एक विकृति बन गया है। हां, यह याकूब का लेखा-जोखा है, आप देख सकते हैं कि यह याकूब का लेखा-जोखा नहीं है, तथापि, जो इस प्रकार है। यह बहुत भ्रमित करने वाला है, जैकब के मन में यही बात उभर कर सामने आती है।

"यह का वृत्तांत है" का कुछ अर्थ तो बनता है लेकिन उत्पत्ति 2:4 के साथ यह कुछ खो देता है। इसलिए, मैं "ये की पीढ़ियाँ हैं..." के अलावा इसका अनुवाद करने का कोई बेहतर तरीका नहीं जानता, भले ही उत्पत्ति 2:4 के साथ यह थोड़ा अस्पष्ट हो सकता है। अन्य वाक्यांशों के साथ भी, आप सोच सकते हैं कि जो आ रहा है वह वंशावली है। बात इतनी भी नहीं है। यह यह विचार है: उत्पाद क्या है? इसका परिणाम क्या है? व्यक्तियों से क्या निकल कर सामने आ रहा है? यह एक

तरह से इतिहास में एक नई शुरुआत का प्रतीक है। यह उत्पत्ति की पुस्तक की संरचना में उस वाक्यांश को चिह्नित करता है। उनमें से बहुत सारे मृत अंत हैं, आप उत्पत्ति 25:12 में देखते हैं, "इश्माएल से जो निकलता है" वह एक प्रकार की वंशावली है लेकिन फिर यह एक मृत अंत है और यह रुक जाता है, यह इसे हमेशा के लिए नहीं छोड़ता है। दूसरा उदाहरण उत्पत्ति 25 के बाद इसहाक और एसाव के साथ है। उत्पत्ति 25:19 में आप देखते हैं कि याकूब की कहानी क्या है, अध्याय 27 में इसहाक का आशीर्वाद प्राप्त करना। फिर वह लाबान से विनती करता है कि वह अपनी पत्नियों और बेटों को कहाँ ले जाए, तो वास्तव में क्या होता है 25:19 याकूब की कहानी है। यह इसी तरह काम करता है, और मुझे लगता है कि यही इस शब्द का महत्व है।

अब अपने प्रारंभिक प्रश्न पर वापस आते हैं तो इसका निहितार्थ यह है कि आप उत्पत्ति 2 में प्रश्न को कैसे देखते हैं, क्या यह केवल सृजन खाते की एक डुप्लिकेट पुनरावृत्ति है? उस अभिव्यक्ति के आधार पर मुझे लगता है कि आप कहेंगे, "नहीं।" प्रगति हो रही है, आगे बढ़ रहा है।

बी. उत्पत्ति 3 के संबंध में उत्पत्ति 2 का कार्य क्या है? 1. उत्पत्ति 2 पतन के वृत्तांत की तैयारी में मनुष्य पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए है

ठीक है दूसरी बात, बी. "उत्पत्ति 3 के संबंध में उत्पत्ति 2 का क्या कार्य है?" मुझे लगता है कि अध्याय 2 का कार्य पतन और पाप के हिसाब की तैयारी के लिए मनुष्य पर ध्यान केंद्रित करना है जैसा कि उत्पत्ति 3 में दर्ज है। उस उद्देश्य के संबंध में हमें कई चीजें मिलती हैं। सबसे पहले, उत्पत्ति 2:8-14 में बगीचे के स्थान का विस्तृत वर्णन है। उन्होंने उल्लेख किया है कि भगवान ने अदन का एक बगीचा लगाया था और फिर श्लोक 10 में एक नदी के बारे में बात करते हैं। यह चार नदियों के नाम देते हैं जो 11-14 में बगीचे के स्थान के संबंध में हैं। तो श्लोक 8-14 में बगीचे के स्थान का विस्तृत वर्णन है। निःसंदेह, उद्यान वह स्थान है जहाँ अध्याय 3 में पतझड़ होता है। इसके अलावा, श्लोक 16 और 17 में अदन की वाटिका में अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाने की मनाही दी गई है... "क्योंकि जिस दिन तुम खाओगे, उसी दिन अवश्य मर जाओगे।" वह निषेध अध्याय 3 के संबंध में महत्वपूर्ण है क्योंकि अध्याय 2 में आपके पास वह निषेध है जो उसके लिए

रास्ता तैयार करता है। मुझे लगता है कि यह निष्कर्ष निकालना संभव या उचित है, कि श्लोक 18-24 में महिला का अधिक विस्तृत वर्णन इसलिए है क्योंकि ईव ने अध्याय 3 में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। क्योंकि आपके पास अध्याय 1 की तुलना में अधिक विस्तृत विवरण है। जहां यह सिर्फ इतना कहा गया है, "और भगवान ने उन्हें नर और मादा बनाया।"

और फिर अध्याय 3 के संबंध में श्लोक 25 भी आवश्यक है क्योंकि श्लोक 25 कहता है कि वे दोनों नग्न थे, वह आदमी और उसकी पत्नी और शर्मिदा नहीं थे। यह अध्याय 3 श्लोक 7 के संबंध में महत्वपूर्ण है और जहाँ गिरने के तुरंत बाद आपने पढ़ा था, "उनकी आँखें खुल गईं, और उन्होंने जान लिया कि वे नग्न हैं। उन्होंने अंजीर के पत्ते इकट्ठे बोये, और अपने लिये झोली बनाई," इत्यादि। आप देखते हैं कि अध्याय 2 और अध्याय 3 के बीच घनिष्ठ संबंध हैं। अध्याय 2 अध्याय 3 में बाद में जो कुछ भी होता है उसके लिए आधार प्रदान करता है। तो फिर, मुझे नहीं लगता कि यह कहने का कोई आधार है कि हमारे पास बस नहीं है अध्याय 1 के साथ डुप्लिकेट निर्माण खाते। प्रगति हो रही है और अध्याय 2 अध्याय 3 के अंतर्गत एक भूमिका निभाता है।

2. क्या उत्पत्ति 2 उत्पत्ति 3 का खंडन करता है? ठीक है, उत्पत्ति 2 के अंतर्गत संख्या 2 है "क्या उत्पत्ति 2 उत्पत्ति 1 का खंडन करती है?" आपको कुछ आलोचनात्मक विद्वान और यहां तक कि कुछ इंजीलवादी भी मिलेंगे, जिन्होंने कुछ हद तक आलोचनात्मक सिद्धांतों के कथनों को स्वीकार किया है और कहा है कि ये दोनों अध्याय विरोधाभासी हैं। स्रोत आलोचनात्मक सिद्धांत और जिस तरह से यह पवित्रशास्त्र से निपटता है, उस तरह के सिद्धांत के संदर्भ में कोई समस्या नहीं है। यदि आपके पास पवित्रशास्त्र के बारे में उच्च दृष्टिकोण है और आपको लगता है कि यह विश्वसनीय है, तो आपके पास चीजों को बताने के लिए एक इतिहासलेखन है जैसे वे वास्तव में घटित हुए थे। यदि वे विरोधाभासी हैं तो इससे समस्या उत्पन्न होती है। आरोप यह है कि उत्पत्ति 1 में घटनाओं का क्रम उत्पत्ति 2 में घटनाओं के क्रम से भिन्न है। उत्पत्ति 1 में श्लोक 11 में आपने वनस्पति का निर्माण किया है, "परमेश्वर ने कहा, चलो वनस्पति उत्पन्न करें।" श्लोक 24 में आपके पास जानवर हैं, "पृथ्वी अपनी जाति के अनुसार जीवित प्राणी, अर्थात् गाय, गाय, गाय-बैल, रेंगनेवाले

जन्तु, और पृथ्वी पर एक-एक जाति के जन्तु उत्पन्न करे।" फिर श्लोक 26 और 27 में पुरुष और फिर स्त्री। फिर सिद्धांत यह है कि जब आप इस दूसरे सृजन खाते पर आते हैं तो क्रम अलग होता है। मनुष्य पहले बनाया गया है, श्लोक 7 "प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की धूल से बनाया।" वनस्पति दूसरा है, पद 8-9 "प्रभु परमेश्वर ने अदन में एक वाटिका लगाई, जहां उस ने मनुष्य को रखा।" जानवर तीसरे स्थान पर हैं। पद 19 "प्रभु परमेश्वर ने मैदान के सब पशुओं को भूमि से उत्पन्न किया।" अंतिम स्त्री "प्रभु परमेश्वर ने आदम से पसली ली और पुरुष से स्त्री बनाई।"

अब हम उसका क्या करें? क्या वास्तव में आदेश में कोई विसंगति है? मुझे लगता है कि ऐसी कई चीजें हैं जिन पर हम गौर कर सकते हैं। मुझे लगता है कि यहां कोई वास्तविक विसंगति नहीं है। सबसे पहले, उत्पत्ति 2 में वनस्पति के निर्माण का वर्णन नहीं किया गया है। जो वर्णित है वह बगीचे का रोपण है। मुझे लगता है कि यह वनस्पति की प्रारंभिक रचना से काफी अलग है। अध्याय 2 के श्लोक 8 में कहा गया है, "प्रभु परमेश्वर ने पूर्व की ओर एक वाटिका लगाई।" तो यह निष्कर्ष निकालने की एक धारणा है कि यह वनस्पति का निर्माण है। दूसरे, मुझे लगता है कि हम संदर्भ और सामान्य सामान्य ज्ञान के आधार पर कह सकते हैं कि श्लोक 8 को इस संकेत के रूप में सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है कि भगवान ने आदम के निर्माण से पहले बगीचे को लगाया था। इससे हिब्रू मौखिक रूपों की अस्पष्टता हो जाती है। यदि आप ध्यान दें तो उत्पत्ति 2:7 में राजा जेम्स कहते हैं, "और यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की धूल से बनाया।" यदि आप एनआईवी को देखें, तो उत्पत्ति 2:8 में "अब यहोवा ने अदन के पूर्व की ओर एक वाटिका लगाई थी।" राजा जेम्स कहते हैं, "प्रभु ने एक बगीचा लगाया।" एनआईवी का कहना है "प्रभु परमेश्वर ने लगाया था।" अब हिब्रू में आप भूतकाल और पूर्ण काल क्रिया के बीच अंतर नहीं कर सकते जैसा कि हम अंग्रेजी में करते हैं। यह या तो हो सकता है। अंतर बताने का एकमात्र तरीका संदर्भ और सामान्य ज्ञान है। और ऐसा लगता है कि परमेश्वर मनुष्य को बगीचे में रखने के लिए बनाने जा रहा है, इसलिए उसने पहले बगीचे को तैयार किया, ताकि वह उसे बगीचे में रख सके। और इसे "रोपा गया" के बजाय "रोपा था" के रूप में अनुवाद करना अधिक समझ में आता है। इसलिए मुझे लगता है कि एनआईवी उस बिंदु पर सही है और वह उस समय बेहतर अंग्रेजी अनुवाद का सुझाव दे रहा है।



3. उत्पत्ति 2:19 यह नहीं कहता कि जानवरों की रचना स्त्री के बजाय पुरुष के बाद की गई।

तीसरा, उत्पत्ति 2:19 यह नहीं कहता कि जानवरों की रचना स्त्री के बजाय पुरुष के बाद की गई। यहां समस्या वही समस्या है जो 2:8 में है, मौखिक रूप के तनाव के साथ। किंग जेम्स कहते हैं, जो व्यवस्था की विसंगति के इस विचार में योगदान देता प्रतीत होता है, "और यहोवा परमेश्वर ने मैदान के सब पशुओं को भूमि से उत्पन्न किया।" एनआईवी कहता है, "अब यहोवा परमेश्वर ने मैदान के सभी जानवरों को जमीन से बनाया था।" और मुझे लगता है कि यह फिर से एक उचित समझ है, जानवरों को पुरुष के बाद और महिला से पहले नहीं बनाया गया था, जानवरों को पहले बनाया गया था जैसा कि हम उत्पत्ति 1 में पढ़ते हैं। अब प्रभु इन सभी जानवरों को आदम के पास लाने जा रहे हैं ताकि वह ऐसा कर सकें। उन्हें नाम दो। और यही श्लोक 19-24 में आता है। यह नहीं कहता कि पुरुष और स्त्री को समय के साथ-साथ बनाया गया था। यह ऐसा नहीं कहता। यह सिर्फ इतना कहता है कि भगवान ने पुरुष और महिला, पुरुष और महिला को बनाया। यह आपको उनके बारे में कुछ नहीं बताता। यह इस बारे में कुछ नहीं कहता है कि क्या यह एक साथ था या क्या कोई समयावधि थी जिसने इसे अलग कर दिया था। इसलिए उत्पत्ति 1 यह नहीं कहती है कि पुरुष और स्त्री को समय में एक साथ बनाया गया था, और उत्पत्ति 2 यह नहीं कहती है कि जानवरों को पुरुष और स्त्री के बीच बनाया गया था।

अब इन कथित विसंगतियों पर उन टिप्पणियों के साथ, आप वास्तव में समस्या का समाधान कर सकते हैं। मुझे लगता है कि उत्पत्ति के अध्याय 2 में तनाव कालानुक्रमिक के बजाय तार्किक है। और यह क्रम प्रगति के तर्क को दर्शाता है, जरूरी नहीं कि यह कालानुक्रमिक क्रम हो। अध्याय 2 और अध्याय 1 के बीच जो कहने की कोशिश की जा रही है, उसमें कोई आवश्यक विरोधाभास नहीं है। जिस तरह से कोई मौखिक रूपों का अनुवाद करता है, विशेष रूप से 2:19 और 2:8 में, जहां "बोया गया था" और "बनाया गया था" यह पूरी तरह से संदर्भ पर निर्भर करता है चाहे वह भूतकाल हो, या पूर्ण भूतकाल। लेकिन इसका मतलब यह है कि कोई व्यक्ति उन मौखिक रूपों को कैसे समझता है इसका महत्वपूर्ण कारक यह है कि क्या उसे दोनों अध्यायों के बीच कोई

विरोधाभास दिखाई देता है या नहीं। यदि आप विसंगतियों की तलाश कर रहे हैं, तो आप इसका अनुवाद उस तरीके से कर सकते हैं जिससे यह उत्पन्न होती है। यदि आप सामंजस्य की तलाश में हैं तो आप इसे उस तरीके से अनुवादित कर सकते हैं जो इसमें सामंजस्य स्थापित करता हो। आप इसे व्याकरण के आधार पर तय नहीं कर सकते, आपको संदर्भ के आधार पर तय करना होगा। अब जैसा कि एक टिप्पणीकार ने कहा है, भले ही आपने दस्तावेजी सिद्धांत को स्वीकार कर लिया हो, फिर भी यह मान लेना उचित है कि जिस व्यक्ति ने इन दोनों सृजन वृत्तांतों को एक साथ रखा था, वह अभी भी उनके बीच विरोधाभासों को जानता था, अन्यथा उसने इसे सुसंगत बनाने के लिए इसे संपादित क्यों नहीं किया होता वह स्वयं? ल्यूपोल्ड , मुझे लगता है कि यह ग्रंथ सूची के अंतर्गत है, पृष्ठ 8 के मध्य में। ल्यूपोल्ड , अपनी टिप्पणी में, पृष्ठ 108, एक अन्य विद्वान को उद्धृत करता है जो कहता है, "यह बिल्कुल असंभव है क्योंकि यह हो सकता है कि लेखक को इतना मूर्ख होना चाहिए था शुरुआत में सृजन के खातों के दो विशिष्ट सेट निर्धारित करने के लिए।

उत्पत्ति 2:5-6 और उत्पत्ति 1:2 के समानांतर,

भले ही किसी ने दस्तावेजी सिद्धांत को बिना किसी समस्या के स्वीकार कर लिया हो, किसी ने ऐसा क्यों किया होगा? दोनों अध्यायों के बीच कोई आवश्यक विरोध नहीं है। ठीक है, उस पर कोई प्रश्न? **(छात्र प्रश्न पूछता है )** मैं डेरेक किडनर के सुझाव का पालन करूंगा , टिंडेल बुलेटिन, 1966, शीर्षक है: "उत्पत्ति 2:5-6, गीला या सूखा।" और उन छंदों की चर्चा है जिसमें उन्होंने निष्कर्ष निकाला है कि वे छंद वास्तव में उत्पत्ति 1:2 के समानांतर हैं, रचनात्मक पदार्थ को व्यवस्थित करने की प्रक्रिया से पहले सृष्टि की अराजक स्थिति। तो वह श्लोक 5 और 6 में कहते हैं, 4बी का दो गुना विस्तार है जिसके द्वारा नंगे वाक्यांश "उस दिन जब प्रभु ने पृथ्वी और स्वर्ग को बनाया" को विशिष्ट सामग्री दी गई है। सृजन के इस शुरुआती चरण में, पाठक सबसे पहले कविता 5 में नकारात्मक "अभी नहीं, अभी नहीं, कुछ भी नहीं" से प्रभावित होता है। एक ऐसे दृष्टिकोण में जो ज्ञात दुनिया में शुरू होता है, और इसकी परिचित विशेषताओं को छीन लेता है। सामान्य पूर्वकल्पनाओं से अपना दिमाग साफ कर लेने के बाद, पाठक अब इस सकारात्मक बयान के लिए तैयार है कि दुनिया का दृश्य श्लोक 6 में कितना भी अजीब क्यों न हो। यह कोई और नहीं बल्कि उत्पत्ति 1:2 में अलग-

अलग शब्दों में सुझाए गए एक दृश्य के अलावा अराजक है। विस्तृत जल. तथ्य यह है कि बारिश अभी भी अज्ञात है, इसलिए सूखे का कोई संकेत नहीं है, बल्कि संतृप्ति की स्थिति है जो उत्पत्ति 1 में दूसरे दिन पानी के विभाजन से पहले हुई थी। मुझे लगता है कि जहां तक इसके बारे में बात की जा रही है यह एक अच्छा सुझाव है और उत्पत्ति 2:5-6 में वर्णित है। वही चीज़ जो आपके पास उत्पत्ति 1 में है। वह बाद में कहते हैं, हम निम्नलिखित के संदर्भ में व्याख्या कर सकते हैं, "जब भगवान ने पृथ्वी और आकाश को बनाया।" ये शुरू में वैसे नहीं थे जैसे हम अब जानते हैं, यहाँ तक कि पृथ्वी पर जंगली विकास भी नहीं था, केवल खेती की गई फसलें थीं। यहां तक कि बादलों और वर्षा से परिचित स्वर्ग भी अभी तक साक्ष्य में नहीं था। इस बीच सारी पृथ्वी असिंचित लग रही थी, बार-बार अपने भीतर से उभर रही थी। तो फिर इसका ध्यान मनुष्य पर केंद्रित है।

### 3. ईडन गार्डन

ए. इसका भौगोलिक स्थान संख्या 3 है: "ईडन गार्डन।" यहां कुछ उप-बिंदु. एक। है: "इसकी भौगोलिक स्थिति।" अदन का बाग कहाँ था? जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, इसके स्थान के बारे में अध्याय 2 में काफी विवरण दिया गया है। आप इसे श्लोक 8-14 में पाते हैं। आपने वहां विशेष रूप से श्लोक 10 से 14 में उन नदियों के बारे में पढ़ा जो बगीचे से जुड़ी हुई थीं। एक नदी अदन से निकलकर बगीचे में चली गई। और फिर वह अलग होकर चार सिर बन गये। पहिले का नाम पीशोन है। यह वह है जो हवीला की पूरी भूमि को घेरता है, जहां सोना है। उस देश का सोना उत्तम है, और सुलैमानी पत्थर है। और दूसरी नदी गीहोन है। उसी के समान जो कुश की भूमि को घेरता है। तीसरी नदी टाइग्रिस है, "यह सीरिया के पूर्व में जाती है।" और चौथी नदी फ़रात है। उत्पत्ति 2:10 में, क्या नदी का उद्गम अदन से है या कहीं और से? मैंने किंग जेम्स से पढ़ा है, "नदी ईडन से निकलती थी और बगीचे को सींचती थी और वहां से वह अलग हो गई और चार धाराएं बन गई।" अब ऐसा लगता है जैसे एक नदी अदन से निकली और वहां से अलग होकर चार धाराओं में बदल गई। अब यह नदियों की कार्यप्रणाली के विपरीत है। जब तक आप डेल्टा के बारे में बात नहीं कर रहे हों। नदियाँ जिस सामान्य तरीके से एक साथ आती हैं वह दूसरा तरीका है। जहाँ नदियाँ

मिलकर एक बड़ी नदी का निर्माण करती हैं। एफ्रैम स्पाइसर , एंकर बाइबिल ऑन जेनेसिस में, पृष्ठ 14, 17, 19, 20, उस कविता का अनुवाद करता है: “ईडन में एक नदी उगती है। बगीचे का पानी।” मतलब नील नदी के पानी की तरह यह भी अपने किनारों पर आने वाला है। इसके बाहर चार अलग-अलग शाखा क्यारियाँ बनीं। और वह उस अनुवाद के लिए प्रभावी ढंग से तर्क देते हैं। यह एक तरह की पुष्टि है.

श्लोक 14 में अंतिम संदर्भ फ़रात नदी का है। हम जानते हैं कि नदी कहां है। भूमध्य सागर, लाल सागर, यहाँ आने वाली सेनाएँ। यहीं पर फारस की खाड़ी है। फरात नदी फारस की खाड़ी में गिरती है। उन दो नदियों की पहचान की जा सकती है : टाइग्रिस और यूफ्रेट्स। दो अन्य अज्ञात हैं। कोई नहीं जानता कि वे हैं। उस पर सभी प्रकार की अटकलें लगाई गई हैं, यह सिर्फ अज्ञात है। लेकिन वास्तव में, मुझे लगता है कि स्थान के बारे में तीन बुनियादी दृष्टिकोण हैं। पहला यह है कि, उस समय का भूगोल, हम मानव जाति के शुरुआती समय के बारे में बात कर रहे हैं, बाढ़ से पहले की अवधि में अलग था। टाइग्रिस, फ़रात, गीहोन और पिशोन चार प्रमुख नदियाँ थीं जो फारस की खाड़ी क्षेत्र में कहीं एक साथ आती थीं। हम नहीं जानते कि पिशोन और गीहोन के साथ क्या हुआ। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि अदन के बगीचे में नदियों द्वारा सींचा जाने वाला क्षेत्र अब फारस की खाड़ी के उत्तरी भाग के नीचे है। फ़ारस की खाड़ी का विस्तृत क्षेत्र पृथ्वी को ढक चुका है, और ईडन गार्डन नीचे चला गया है। यह संभव है, लेकिन वास्तव में कोई नहीं जानता।

फिर यहाँ केवल यह चर्चा है जिसे आमतौर पर उत्पत्ति 4:16 में यह कहते हुए संदर्भित किया गया है, "कैन ईडन के पूर्व में प्रभु की उपस्थिति में बाहर गया।" नोड की भूमि ईडन के पूर्व में है। आप इसकी तुलना 2 राजा 19:12 से करते हैं, और आप पढ़ते हैं "क्या उन राष्ट्रों के देवताओं ने उन्हें बचाया जो मेरे पूर्वजों द्वारा नष्ट कर दिए गए थे .. और ईडन के लोग जो तेल अस्सर में थे," उनका राज्य कहाँ है ..." " अदन के बच्चे तेल अस्सर में थे।" वह मेसोपोटामिया क्षेत्र है। तो यह वास्तव में बहुत मदद नहीं करता है लेकिन ये ऐसे संदर्भ हैं जो कभी-कभी इसके साथ जुड़े होते हैं। तो एक संभावना यह है कि यह फारस की खाड़ी क्षेत्र में स्थित था।

दूसरी संभावना, बाढ़ से पहले इन तीन नदियों के नाम बाढ़ के बाद याद रखे गए और अन्य

नदियों पर लागू किए गए। अगर ऐसा है, तो इसका मतलब है कि ईडन गार्डन कहीं भी हो सकता है। इसका मतलब यह होगा कि टाइग्रिस और यूफ्रेट्स केवल वे नाम हैं जो बाढ़ के बाद लाए गए थे और उन नदियों पर लागू किए गए थे जिन्हें किसी भी नदी का नाम दिया जा सकता था, लेकिन जरूरी नहीं कि वही नदियां हों जो बाढ़ के बाद विन्यास में बदल गई हों।

तीसरी स्थिति वह है जिसे आप तेजी से पाएंगे और वह यह है कि ईडन गार्डन कभी अस्तित्व में नहीं था। हमारे पास यहां केवल एक कहानी है, एक प्रकार की धार्मिक कल्पना है, जिसका कोई ऐतिहासिक आधार नहीं है और कोई वास्तविकता नहीं है और यदि आप पूछ रहे हैं कि ईडन गार्डन कहां स्थित है तो हम वास्तव में गलत सवाल पूछ रहे हैं। मैं इसे इस छोटी सी किताब से स्पष्ट करना चाहता हूं, जो आपकी ग्रंथ सूची पर है, जेसी गिब्सन, द डेली स्टडी बाइबल श्रृंखला, वेस्टमिंस्टर, 1981। यह एक लोकप्रिय श्रृंखला है, यह आम लोगों के लिए लिखी गई है। और यह एक समसामयिक श्रृंखला है, इसका उपयोग कई चर्चों में उनके ईसाई शिक्षा कार्यक्रमों में किया जाता है। पृष्ठ 100, आइए मैं आपको पढ़ता हूं कि यह ईडन गार्डन के स्थान के बारे में क्या कहता है: "यह मेरा तर्क है कि अगर हम ईडन गार्डन की कहानी को समान कल्पनाशील भावना से देखते हैं।" उनका पिछला पैराग्राफ सिंड्रेला की कहानी के बारे में बात कर रहा था। "सब कुछ इसी तरह अपनी जगह पर आ जाएगा। कुम्हार और ज़मीन के मालिक के रूप में भगवान की भोली-भाली तस्वीरें, पेड़ जिनके जादुई फल से अद्भुत उपहारों का अनुमान लगाया जाता है, बात करने वाला साँप, संरक्षक करूब, बगीचा ही ये सब...तो ये सब कहानी में फर्नीचर हैं। वे इसके अंतर्निहित अर्थ का हिस्सा नहीं हैं। ईडन गार्डन जैसी कोई जगह कभी नहीं थी। न ही कभी एडम नाम का कोई ऐतिहासिक व्यक्ति था जो वहां रहता था और सांपों और भगवान से हिब्रू में बातचीत करता था। बगीचा मन का बगीचा है। यह पुरुषों के सपनों का बगीचा है। वे इस दुनिया को जिस तरह की जगह बनाना चाहते हैं, वास्तव में वे जानते हैं कि यह दुनिया ऐसी ही होनी चाहिए। और एडम हम में से प्रत्येक है, वह प्रत्येक व्यक्ति है। यह संसार वैसा नहीं है जैसा इसे होना चाहिए, यह मनुष्य की ईश्वर के प्रति अवज्ञा के कारण है, हम सभी में पापी आदम के प्रति। हर दिन स्वर्ग हमें बुलाता है। लेकिन हर दिन हम वर्जित फल खाते हैं और उससे दूर हो जाते हैं।" तो इस प्रकार का दृष्टिकोण कहता है

कि ईडन गार्डन जैसी कोई जगह कभी नहीं थी, और एडम जैसा कोई व्यक्ति कभी नहीं था। यह धार्मिक महत्व की कहानी है, केवल यह ऐतिहासिक तथ्य नहीं है। यह उन मुद्दों पर वापस जाता है जिनके बारे में हम पहले बात कर रहे थे। यह पुराने नियम के इतिहासलेखन पर वापस जाता है, क्या यह हमें घटित घटनाओं के बारे में बताता है, या नहीं? मुझे लगता है कि भौगोलिक स्थिति के प्रश्न पर ये तीन बुनियादी दृष्टिकोण हैं।

बी। है: "बगीचे के पेड़।" लेकिन मेरा समय समाप्त हो गया है, इसलिए हम इस बिंदु पर रुकेंगे और अगली बार वहीं से शुरू करेंगे।

नीना गुंड्रम

द्वारा लिखित      टेड हिल्लेब्रांट द्वारा रफ संपादित

राचेल एशले द्वारा अंतिम संपादन

टेड हिल्लेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया